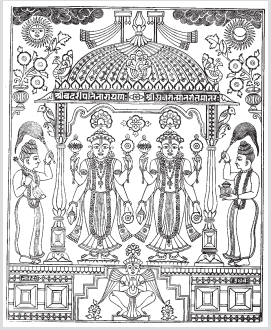

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५८ फरवरी-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	दान का नियम	०४
०४.	प्रसादी की रारवी	०६
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	०७
०६.	सत्संग बालवाटिका	०९
०७.	भक्ति सुधा	१२
०८.	सत्संग समाचार	१९

॥ अस्मदीयम् ॥

भगवान सूर्यनारायण का मकर राशी में गमन होने के बाद भी ठंढी का प्रभाव कम नहीं हुआ। इस वर्ष ठंढी का प्रारम्भ थोड़ा विलम्ब से हुआ था। ठंढी के कारण ही इस वर्ष की फसल बहुत अच्छी है। समग्र राज्य में धन-धान्य से प्रजा सुखी होगी। किसानों के आनन्द की सीमा नहीं है। किसानों के सुखी होने पर पूरा भारत सुखी होगा। कारण यह कि अपना देश कृषी प्रधान देश है।

गत मास में अपने सभी मंदिरों में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में शाकोत्सव मनाया गया। शाकोत्सव के अवसर पर सत्संगियों के साथ अन्य लोग भी इस उत्सव का लाभ लिये थे। शाकोत्सव में भाग लेने के साथ सत्संग का लाभ एवं प्रभु दर्शन का आनन्द अपने तथा पराये सभी ने लिया। सत्संग का जिन्हे रंग रंगा वे तो सत्संगी हुये जो नहीं हुये वे विलम्ब से होंगे तो सही। ऐसे उत्सवों का यदि अन्तिम समय में याद आ जाय तो जीव चाहे कैसा भी हो उसका कल्याण निश्चित है। यही समझकरके महाराजने उत्सव प्रारम्भ किया था।

मूली मंदिर में अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से परंपरागत वसंतोत्सव, रंगोत्सव बड़े उल्लास के साथ मनाया गया था। झालार-हालार, पांचाल तथा भाल देश के हरिभक्तों ने इस उत्सव का लाभ लेकर प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों किंशुक के पुष्पराग से बने रंग में रंगाकर जीवन को कृतार्थ किया था। अब परमकृपालु प्रभु श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। देश-विदेश के सभी हरिभक्त इस प्रसंग पर पदार्पण करके दर्शन का लाभ लें ऐसी प्रार्थना है। ओस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में अपने श्री स्वामिनारायण के नूतन मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों मूर्तिप्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस तरह ओस्ट्रेलिया में मंदिरों की संख्या बढती जा रही है, यह आनन्द का विषय है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट : **www.narayanghat.com**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१२)

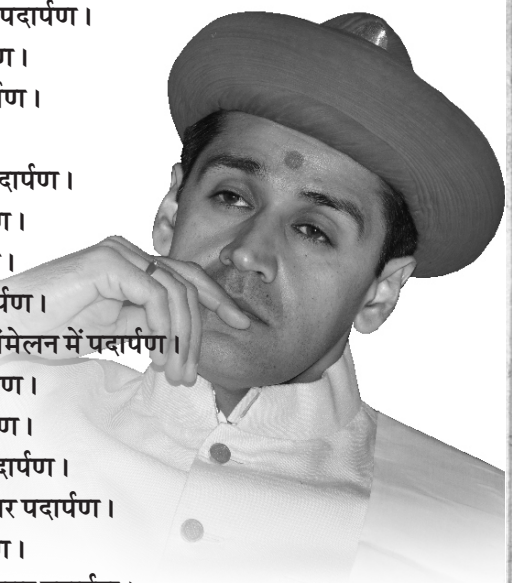

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२ से ३ तक रामपर (कच्छ) पदार्पण।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
५. जूना घाटीला गाँव में (मूलीदेश) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर जुंडाल पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
७. अंबोड (जि. गान्धीनगर) गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
८. श्री नरनारायण युवक मंडल माणसा द्वारा आयोजित युवा संमेलन में पदार्पण।
वावोल श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
९. श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा कथा प्रसंग पर पदार्पण।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर लूणावाडा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ कथा तथा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१४-१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुखपर (कच्छ) नरनारायण नगर पदार्पण।
१७. चराडवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोरणा (मूलीदेश ता. चूडा) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
१९. श्री भरतभाई कानजीभाई मूलाणी के यहाँ पदार्पण, जीवराजपार्क
२०-२१ बलदिया (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२२ जनवरी से ४ फरवरी तक मेलबोर्न (ओस्ट्रेलिया) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा तथा सत्संग विचरण हेतु पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१२)

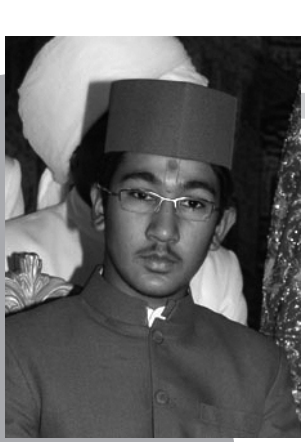

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंमची को पाटोत्सव तथा रंगोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहेनोका) उवारसद मूर्ति प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथों से किया।

दान का नियम

(दान की महिमा)

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

शिक्षापत्री श्लोक १४७ में भगवानश्री सहजानंद स्वामी ने लिखा है कि गृहस्थाश्रमी सत्संगी अपनी वृत्तियां उद्यम का जो धन धान्यादिक प्राप्त हो उसमें से दशवां भाग भगवान कृष्ण को अर्पण करे, यदि व्यवहार में दुर्बल हो तो वीशवां भाग अर्पण करे।

श्रीमद् भागवत में भी कहा गया है कि सभी प्राणियों के एक मात्र आश्रय पूर्ण ब्रह्म भगवान श्री कृष्ण को ही दान करने से अनन्त गुना फल मिलता है। दान धर्म में वृद्ध पराशर ने भी कहा है कि किसान को भी अपने खेती में से वीशवां भाग दान करने से खेती में होने वाले दोष नहीं लगते। शास्त्रो में दान के बहुत सारे भेद बताये गये हैं। उस में भी स्थल, समय, लेने वाला, दाता, इत्यादि का विशेष प्रभाव बताया गया है। उन सभी नियमों का अनुसरण करना कठिन है। इसलिये अपने इष्टदेव ने दशवां या वीशवां भाग दान देने के लिये कहा है। भगवान श्री कृष्ण को ही दान करने में श्रेयष्कर है अन्य को नहीं।

अपनी वृत्ति में से या व्यापार में से अथवा खेती में से जो धन प्राप्त हुआ है। उस में से १०% या ५% प्रतिशत भाग अपने इष्टदेव को अर्पण अवश्य करना चाहिये। व्यवसाय में से खर्च करने के बाद जो बचे उस में से पांच या दश प्रतिशत दान भेंट करने का नियम बताया गया है। एकाउन्ट का हिसाबी रजिस्टर चाहे जैसा हो लेकिन इष्टदेव को दान भेंट का हिसाब तो साफ सुथरा होना चाहिये।

दान तथा भेंट में अन्तर है। दान स्वेच्छा से देने की एक पद्धति है। भेंट तो व्यवसाय में से या वृत्ति में से दश प्रतिशत भाग देने का नियम है। दान भेंट भक्तिमार्ग में भक्ति के रुप में दिया जाता है। जो भक्त जिसकी शरणागति स्वीकार करता है उसी के आश्रय रुप में दान करता है। जिस तरह राज्याश्रम के रुप में कर (टेक्ष) देना अनिवार्य होता है उसी तरह धर्माश्रम के भाग रुप में अपने इष्टदेव को विना शर्त के दान करने की परम्परा है। राज्य-कर लेकर देश को भौतिक सुख प्रदान करता है तो इष्टदेव आध्यात्मिक सुख-रक्षण करते है।

सहजानंद स्वामी ने गुरु रामानंद स्वामी से दो वरदान मांगे थे। जिसके परिणाम स्वरुप आश्रितों के प्रारब्धबदल जाते हैं। उस में भी कमी रहती है वह भी पूर्णहो जाती है। सम्प्रदाय में आश्रित होकर इस तरह का आदान प्रदान अत्यन्त आवश्यक होजाता है। जिस तरह वीमा का हप्ता न भराजाय तो उसके सुरक्षा की जवाब दारी कम्पनी की नहीं रहती।

दान- पान तथा पुण्य के विनय का व्यापार है। दान भक्ति-प्रशन्नता (शरणागति) का एक महत्व का भाग है। ब्राह्मण तथा शुद्र दान लेने के हकदार तथा वैश्य-क्षत्रिय को दान देने का अधिकार है। लेकिन दान तो चारो वर्ण को करना चाहिये। दान देने के लिये वहाँ तक जाना चाहिये।

इसके अलांवा दान की धनराशी किसी अन्य कार्य में नही लेना चाहिये या अपने इष्टदेव की धनराशी किसी अन्य स्थान में दान नहीं देना चाहिये । भोजन के निमित्त यदि दान देना हो या अन्य कोई सत्कर्म करना हो तो अपने दान वाले भाग में से नहीं करना चाहिये । भगवान का हिस्सा भगवान के लिये होना चाहिये । भगवान को दिया जाने वाला दान जब तक नही दिया जाय तब तक ऋण में से मुक्ति संभव नहीं । यह एक विशिष्ट अत्तरदायित्व का कार्य है ।ईश्वर को दियाजाने वाला दान किसी अन्य दान में विभाजित नहीं किया जा सकता । इसकी अन्य कोई व्यापारकाभी नही हो सकती । शिक्षापत्री में दान का महत्व बताकर कहीं भी जिस हेतु से दान देना तो वह वात की है लेकिन अपने कमाई में से जो वीशवां-दशवां भाग की बात है वह तो अपने इष्टदेव को ही अर्पण करनी चाहिये ।

हम चाहे जिस किसी भी धर्म में प्रवृत्त हों हमारी विचारधारा सम्भवत: अपने धर्मफल की प्राप्ति को ध्यान में रखकर पुण्य करने वाली हो तथा प्रभु की आज्ञा का जहाँ लोप होता हो ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिये । लेकिन आप अपनी कमाई में से कुछ अधिक पुण्यकार्य करना चाहते है तो उसे अवश्य करें । भगवान तीनों काल को जानते हैं फिर भी प्रभु के दान के विषय में कोई विकल्प की वात ही नहीं की है । इसका कारण यह है कि भक्त अपने व्यवसाय या नौकरी में से जो दशवां या वीशवां भाग दान करेगा तो उसका धन तथा कर्म सभी निर्गुण अर्थात् दोष रहित हो जायेगा ।

देव को दान करने के विषय में अपने संप्रदाय में देश विभाग के लेख में एकदम स्पष्ट कर दिया है । जिस देश में जो हरिभक्त रहते हैं वही पर अपना दान करें । श्री नरनारायणदवे के देश में रहने वाले भक्त श्री नरनारायणदेव को अर्पण करे तथा श्री लक्ष्मीनारायण देव देश में रहनेवाले भक्त अपने इष्टदेव को अर्पण करें । आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संत जब दान लेने आवे तो उन्हें दान करें या जिस देश में रहते है उस देश के भंडार में अर्पण करने स्वयं जांये । देश विभाग का लेख अवश्य पढना चाहिये। आपकी शंका का निवारण अपने आप हो जायेगा ।

अपने संप्रदाय में तो प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक पशु के नाम से भी दान करने की प्रणाली है । प्रारंभ के समय में प्रत्येक व्यक्ति के नाम से ५० पैसे दान करते थे । अब ५ रुपये दान करते हैं । गृहस्थाश्रमी भक्त धर्मवंशी आचार्य को गुरु बनाकर उन्हीं से मंत्रदीक्षा लेते है । इसलिये गुरुजी दान लेने के हेतु से मंदिर में प्रति वर्ष भेंट जमा करवाते हैं । शिक्षापत्री श्लोक ७१ में कहा है कि हमारे आश्रित अपने आचार्य की अन्नवस्त्रादि द्वारा पूजन करें । आचार्यजी भी अपने जीवन को सत्संग के लिये अर्पण किये हुये हैं । देव मंदिर द्वारा प्राप्त धन का उपयोग करने से दोष लगता है । इसलिये उस अन्नादिक का उपयोग गृहस्थ नकरें । उसी अन्न वस्त्रादि को आचार्यश्री तथा धर्मकुल प्राप्त करते हैं । यह एक अद्वितीय परंपरा है । इसके अलांवा आचार्यश्री जब सत्संग प्रचार में विचरण करते हैं उस समय उन्हें जोभी भेंट प्राप्त होता है उसे मंदिर में जमा करके भक्त को रसीद दी जाती है । यह परंपरा प्राचीन है आज वर्तमान में भी चल रही है । लाखो रुपये मंदिर में जमा होते है । महाराजश्री के नाम की धनराशी आचार्यश्री के लिये उपयोग में आती है । गुजराती शब्द है धर्मादो धर्म + आदौ अर्थात् पहले धर्म, प्रथम कर्तव्य यह है कि धर्म के माध्यम से अपनी कमाई का दशवां या वीशवां भाग प्रभु को अर्पण करना । धर्मादा न देने से प्रभु की शरणागति अपने आप कैन्शिल हो जाती है । जो कमजोर है वे वीशवां भाग दान करें, यह सम्भव है कि वे कमजोर इसलिये है कि वीशवां भाग दान करते हैं। दान न करने से आर्थिक दुर्बलता आनीपूर्ण सम्भावना है । कितने हरिभक्त ऐसे है कि पगार मिलने पर उसमें से धर्मादा करने के बाद ही अन्य रकम घर ले जाते हैं । कितने किसान अपने खेत में से अन्न मंदिर में भेंज देते हैं। भगवान के भाग को वे अपने घर भी नहीं ले जाते ।

प्रसादी की राखी

– प्रफुल्ल खरसाणी

यह बात अहमदाबाद मंदिर के निर्माण के समय की है। अहमदाबाद मंदिर का निर्माण कार्य श्रीहरिने आनन्द स्वामी को सौंपा था। मंदिर निर्माण के लिये धांगध्रा से पथ्थर लाये जा रहे थे। उस समय आज की तरह वाहन व्यवहार की व्यवस्था नहींथी । सत्संगी हरिभक्त बैलगाड़ी इत्यादि के साधनो से सेवा में लग जाते थे। स्वयं के खर्च से यह सेवा करते थे । उस समय एक हरिभक्त जो अपनी बैलगाड़ी में पत्थर ला रहे थे। संयोग वश एक बैल मर गया, अब उस बैल की जगह पर स्वयं लग गये और पत्थर को यहाँ तक लेआये । उनकी इस अनन्य निष्ठा से प्रभावित होकर उस पत्थर को श्रीहरि अपने बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किये, जो आज भी श्री राधाकृष्ण मंदिर के सामने मौजूद है और हरिभक्तों के मनोरथ को पूर्ण कर रहा है। उस प्रसादी के बैलगाडी को श्रीहरिने स्पर्श किया था इसलिये उसे श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शनार्थ रखा गया है।

उसी समय का एक दूसरा प्रकरण भी है । अंकेवाडिया गाँव के सेवा भावी हरिभक्त जीवा विरमगामा की बात है। अहमदाबाद मंदिर के शिखर पर १६० मन वजन का पत्थर धांगध्रा से लाना था । यह काम बड़ी मुश्किल का था । इतने वजन का १ पथ्थर लाने के लिये कोई तैयार नहीं हुआ। रास्ते में गाड़ी टूट जाय या बैलमर जाय ऐसी शंका से कोई तैयार नहीं हुआ । परंतु अंकेवाडिया के जीवाभाई विरमगामा नामवाले हरिभक्त के मन में विचार आया कि जो महाराज चाहेंगे वही होगा। जगत के नियंत स्वयं श्रीहरि हैं। श्रीहरि में उनकी अटूट श्रद्धा थी उन्हें यह पता था कि प्रभु कोई अड़चन नहीं आने देंगे । ऐसा विचार कर श्रीहरि का स्मरण करते हुये १६० मन के वजन वाले पथ्थर को अपने बैलगाडी में रखकर ६ बैलों को जोड़कर अहमदाबाद के लिये प्रस्थान किये । उस हरिभक्त ने देखा कि इतने बजन का पत्थर है तो भी पहिया जमीन में विना दबे चल रही है और बैल भी बड़ी मस्ती में चल रहे हैं जैसे इन्हें कोई परेशानी ही न हो । उस समय जीवाभाई को यह निश्चय हो गया कि श्रीहरि के विना यह कौन करेगा। परोक्ष रुप से प्रभु सहायता कर रहे थे। यह चिन्तन करते करते वे प्रभु के ध्यान में लीन हो गये। इतने में धुरी के टूटने की आवाज आई फिरभी गाड़ी चलती रही बड़ा अलौकिक यह चमत्कार था । सुरक्षित वे अहमदाबाद कैसे पहुंच गये। यह सब प्रभु की लीला के विना सम्भव ही नही था। मंदिर में आये तो उस समय सभा मंडप में सभा चल रही थी। महाराज उन्हे आया देखकर सभा में बुलाया और उनके निष्ठा की प्रशंसा की । जीवाभाई कहने लगे महाराज ! यह अशक्य काम को आपने ही शक्य किया है। हम तथा हमारी गाड़ी या बैल तो निमित मात्र है । आपकी प्रसन्नता से यह सरल हुआ । महाराज उनके ऊपर प्रसन्न होकर उनकी निष्ठा की प्रसंशा किये और कहे कि आइये मैं अपने हाथ के रक्षा सूत्र को आपके हाथ में बांधदेता हूँ। जिस राखी को महाराजने जीवाभाई को बांधीथी वही राखी आज तक उनके वंशज सुरक्षित रखे रहे। उन्हीं के वंशज मावजीभाई छगनभाई विरमगामा ने प.पू. बड़े महाराज को वही राखी लाकर म्युजियम में सुरक्षित रखने के लिये भेंट कर दी। अब वह प्रसादी की राखी सदा के लिये सभी की दर्शनीय रहेगी। आप जब भी म्युजियम में दर्शन के लिये पधारे तब सभी प्रसादी की वस्तुयें के साथ उस राखी का अवश्य दर्शन करें । उस राखी के दर्शन से निश्चि ही आपको भी जीवाभाई की तरह अदम्य उत्साह के साथ सेवा करने का भाव आयेगा। उससे सभी को वैसी प्रेरणा मिलती रहेगी।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

अपने म्युजियम को आगामी फाल्गुन शुक्ल-३ ता. २४-२-२०१२ १ वर्ष पूरा हो रहा है। उस दिन सायंकाल को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ समूह महापूजा होगी इसके साथ ब्राह्मण भोजन भी होगा। एक वर्ष कितने जल्दी बीत गया खबर भी नहीं पड़ी। परंतु म्युजियम वर्षो पुराना है ऐसी अनुभूति लोगों को हो रही है। उद्घाटन समारोह में माननीय मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने इसीलिये ऐसा कहा था कि जैसे कोई नया भवन तैयार हुआ है ऐसी यहाँ दिव्य अनुभूति हुई है ऐसी अनुभूति अन्यत्र कहाँ हो सकती है। प.पू. बड़े महाराजश्री भी कहते है कि जिस तरह अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव या जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन से तृप्ति नहीं होती उसी तरह से इस म्युजियम के दर्शन से तृप्ति नहीं होती। यहाँ पर देवस्थानों की तरह सभी के मनोरथ पूर्ण होते हैं। अभी वर्तमान में बलोल गाँव के श्री नरसंगभाई चावडा तथा भीमाभाई चावडा नाम के दो हरिभक्तों के मनोरथपूर्ण होते ही बलोल गाँव (भाल देश) से यहाँ तक करीब १०० कि.मी. पदयात्रा करके आये थे। इस तरह अनेको म्युजियम दर्शनार्थियों के मनोरथ पूर्ण होते देखे गये है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली (जनवरी-२०१२)

- रु. २,००,०००/- अ.नि. कान्तिलाल नालाल शाह, अ.नि. कमलाबहन कांतिलाल शाह, अ.नि. नवीनचंद्र वाडीलाल शाह, अ.नि. ब्र. स्वा. कृष्णस्वरुपानंदजी (जन्म शताब्दी के निमित्त)
- रु. १,००,०००/- लालजी मनजी गाजपरीया - पीपावा
- रु. ५१,०००/- चि. लेकमीना विवाह के निमित्त भेट - वडु वती डॉ. ज्योत्स्नाबहन, विनोदभाई तथा किशनभाई
- रु. ४०,०००/- साजन जतीन पटेल, अन्ना जतीन पटेल, किशन रीतेष पटेल विमल प्लान्ट-मणीनगर
- रु. ३१,०००/- होटल घुंघट - गांधीनगर
- रु. २५,०००/- देवजी बिरजी हीराणी मांडवी
- रु. २१,०००/- धीरजीभाई के. पटेल - अहमदाबाद
- रु. ११,०००/- शशीकान्तभाई रवजीभाई पटेल - अहमदाबाद
- रु. १०,०००/- पूनमभाई मगनभाई पटेल - अहमदाबाद
- रु. ५,५००/- अ.नि. मनसुखलाल जेठालाल वोरा - अहमदाबाद वती कंचनबहन मनसुखलाल वोरा।
- रु. ५,१११/- रमणभाई शामलभाई पटेल - बायड
- रु. ५,१००/- अ.नि. केशवलाल छगनदास पटेल, धुलीबहन केशवलाल पटेल - गुलाबपुरा वती सेंधाभाई रसीकभाई
- रु. ५,१००/- भरतभाई डी. चौधरी - अहमदाबाद
- रु. ५,००१/- नीलबहन हर्षदभाई परीख - मणीनगर
- रु. ५,०००/- डॉ. कांतिभाई पटेल - नवसारी
- रु. ५,०००/- राठोड विजयभाई घनश्यामभाई - चांदलोडिया
- रु. ५,०००/- उत्सव पंकजकुमार पटेल - गामडीवाला
- रु. ५,०००/- महेन्द्र मनहरभाई अमीन - अहमदाबाद
- रु. ५,०००/- धनजीभाई हरजीभाई भुडीया - मांडवी
- रु. ५,०००/- महेशभाई एस. पटेल - लालोडावाला-वापी।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची (जनवरी-२०१२)

- ता. १ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, जलेश्वर महादेवनगर वती जसुमतीबहन तथा लाभुबहन एवं विजया बहन
- ता. ३ महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर, मोरबी, दरबागढ वती सां.यो. राजकुंवरबा, उषाबा, वसंतीबा, श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्यानगर
- ता. ६ सौमिल हसमुखलाल शाह ह्युस्टन (अमेरिका)
- ता. १० श्री घनश्याम महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणघाट। वती, पुष्पाबहन, भगवतीबहन तथा शारदाबहन।
- ता. ११ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर। वती नीलाबहन के. पटेल
- ता. १५ प्रवेशचन्द्र मीलाल सोनी (नि. मामलतदार) अहमदाबाद
- ता. २२ श्री नरनारायणदेव सत्संग समाज - नवावाडज।
- ता. २४ संजयभाई हरिभाई ठक्कर - आंबली।
- ता. २५ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - नवावाडज। वती श्री नरनारायणदेव युवक मंडल।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com ● email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

लोक की दृष्टि में कुबेर का खजाना अमूल्य माना जाता है । इसके मालिक स्वंय कुबेर है । इस खजाना को कुबेर कभी किसी को दे सकते हैं क्या ? यदि कुबेर अपना खजाना किसी को दे दें तो वह आज की दुनियां में सबसे बड़ा धनवान हो जायेगा । लेकिन क्या उसके जीवन का भला हो सकता है ।

इससे बड़ी बात तो यह है कि अक्षरधाम के अधिपति सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपना दिव्य खजाना इस धरती पर रखे हैं जिसके मालिक स्वयं प.पू. बड़े महाराजश्री हैं । इस दिव्य खजाना का दर्शन करने के लिये प.पू. बड़े महाराजश्री ने जगत के जीवों का कल्याण हो इसलिये खोल दिया है । इस प्रसादी भूत वस्तुओं के दर्शन से भगवान की दिव्य भावना समाई हुई है । इस दर्शन में यदि भगवान के लीला चरित्रो का स्मरण हो जाय तो कल्याण मार्ग उसका खुला हुआ है ऐसा समझना चाहिये । श्री नरनारायणदेव के लाईव बेनीफिट का अमूल्यलाभ सत्संगी मात्र के लिये प.पू. बड़े महाराजश्रीने सरल बना दिया है । इस अमूल्य लाभ को सभी भक्त दिन प्रतिदिन लेते रहें और अपने अन्तःकरण में उतारते रहें ऐसी अभ्यर्थना के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में कोटि कोटी बन्दन । (रचित मोदी)

यहाँ बहुत आनन्द हुआ और वारम्बार आना पड़े ऐसा विचार आने लगा है । यहाँ आकर बहुत कुछ सीखना है । प.पू. बड़े महाराजश्री को खूब-खूब अभिनन्दन । हिन्दुधर्म की वंश परम्परा जो गद्दी है इससे ऐसे संग्रहालय बनें इसीसे अपनी संस्कृति बच सकती है । (मीरा साराभाई - शाहीबाग)

इस म्युजियम का दर्शन करके हमें लगता है कि भगवान हमारे साथ साक्षात् विद्यमान है । इस दर्शन के बाद हम अब कभी भी पीछे नहीं हटेंगे । यह संप्रदाय इसी तरह सदा बना रहे यही कहना है । यही हमारी अन्तिम प्राप्ति है । इसमें से किसी भी एक प्रसादी की अन्तिम में याद आजाय तो परम अक्षरधाम की प्राप्ति सरल हो जायेगी । यहाँ आने वालों के रोग मिटजाते हैं । (जयश्री स्वामिनारायण ए.वी. पटेल)

अक्षराधीश पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण श्री सहजानंद स्वामी के दर्शन देवताओं से लेकर प्रकृति पुरुष तक सभी के लिये दुर्लभ है । हमें तो उस दिव्य दर्शन का यहाँ लाभ मिला है । इस दर्शन से मैं अपने जीवन को धन्य मानता हूँ । इसका श्रेय प.पू. बड़े महाराजश्री को है । (केतन - लंडन)

An Excellent Achievement and Great Vision. I Would Come Again, Bringing New Visitors Each Time. Never Enough Time to Visit and Appreciate the many Artifacts.

(Lalji Ratna Patel U.K.)

I am so very impressed. What more do I say. The hand work behind this can be felt in every step we face here, Thrilled to be here !

(Aditya S. Kanak Jalan, Patna)

This Museum beholds the greatest history we've ever seen. Thanks to Mota Maharajshri & all Those involved in Makeup this possible. Thanks God

(Uday and Hina Gosalia NY)

It was divine experience over here. we Feel Something that had been never feel any where on this earth.

(Vijay Hirani)

A very unique Display of Maharaj's Belongings and Experience of His true form

(Mahendra and Maya Amin - Sydny)

It's a Lifetime experience I feel energetic. My trip to India is now full filled.

(Gaurav Saparia - Australia)

It was Great to see this beautiful please and also know about it.

(Luis Ahvmada A - Chile)

I felt such a peace of mind Which was uniqe experience Whole place has divine vibrations. I felt that I have Personal encounter with Maharaj. I was impressed to see some divine remains of Maharj like hair, nails, Asthi etc. Panchala raas with nand santos is unique darshan. I was recognizing typical attire for Gopalanand swami, Brahmanand Swami, Gunatitanand Swami and other nand santos. I recommend some one who wants mental peace should spend whole day here in divine atmosphere.

(Varsani Ratna Devsi - Kenya)

सत्संगबालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सफलता के सोपान

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

चलो मित्रो ! आज हम ऐसे शिक्षक की बात करते है जो दुनियां में सबसे बड़ा हो और अच्छी बात सिखावे। यदि आपको अपने विद्याभ्यास में सफलता प्राप्त करनी हो तो शिक्षापत्री श्लोक १२९ में भगवान स्वामिनारायण ने जो सत्शास्त्र के अभ्यास की बात की है और शतानंद स्वामी ने जो टीका लिखी है उसका चिन्तन करके जो जीवन में उतारें तो निश्चित सफलता मिलेगी। कारण यह कि वार्षिक परीक्षा का समय अब नजदीक आ रहा है। कितने लोग बोर्ड की परीक्षा में होंगे कुछ लोग स्नातक-स्नातकोतर की परीक्षा में होंगे इन सभी के लिये जीवनोपयोगी बात यहाँ प्रस्तुत है।

अभ्यास की वात जब आती है तब स्वामी कुछ लेख लिखते हैं । जिन्हे पढना है, विद्याभ्यास करना है, शास्त्राभ्यास करना हो, इन सभी के लिये उपयोगी कथा है। सबसे पहले तो वांचन करना फिर मनन करना और बाद में याद करना (गोखड़पट्टी करना) इसके बाद उसी का बारम्बार आवर्तन करना। इस तरह चार प्रकार से विद्याभ्यास की वात कही गयी है। लेकिन इन चार प्रकार की विद्या की प्राप्ति में गुरुशुश्रूषा परमावश्यक है। इस के विना विद्या की प्राप्ति सम्भव ही नही है। यह वात मनुस्मृति में स्पष्ट कही गयी है।

जिस तरह जमीन के खोदते रहने से एकदिन निश्चित जमीनके भीतर से पानी निकल आता है, ठीक इसीतरह गुरुजी की सेवा करते रहने से विद्या की प्राप्ति होती है।

जिन्हे विद्या प्राप्त करनी हो उन्हें कैसे रहना चाहिये। प्रथम प्रमाद का परित्याग, आलस्य का परित्याग करना आवश्यक है । जिसके जीवन में यह सब रहेगा उसे कभी भी सफलता नहीं मिल सकती। विदुरजी कहते हैं कि - आलस्य मद-मोद, चंचलता, वात करने की कुटेव, जडता, अभिमान इत्यादि जिसके जीवन में हो वह कभी भी विद्याभ्यास नहीं कर सकता । जिन विद्यार्थियों को विद्या प्राप्ति करना हो वे शरीर सुख का परित्याग करदें।

जिन्हे सम्बधरखना हो, कुरशी टेबल या गाड़ी इत्यादि सुख सुविधा की चाहना हो वे पढना छोड़दे। जिन्हे पढना हो वे सुख के साधन छोडदें। दोनो में से एक ही संभव है। जिन्हे बहुत सुख के साधन मिलते है उनके पिताजी परीक्षा के बाद दौडादौड़ी करते हैं। पेपर कहा गये है उसकी खोज में लग जाते हैं। यद्यपि रोड़ की लाईट में वांचने वाले फर्स्ट क्लास पास हो जाते हैं। इस तरह की विषमता समाज में देखने कोमिलती है, यही सत्य भी है। जिन्हें पढने की चाहना हो वे सुख साधन का परित्याग करदें, अन्यथा उनकी प्रगति बाधित होगी। पढ़ने वाले विद्यार्थी प्रातःकाल उठकर वांचन करें। यह बुद्धि के लिये उत्तम समय है। कोई भी वस्तु याद करना हो तो चिन्तन करना हो तो प्रातः उठकर चिन्तन वांचन करना चाहिये। लेकिन दिन में सोना नहीं चाहिये। जो दिन में सोजाते हैं उनकी बुद्धि मोटी हो जाती है।

विद्यार्थियों को कुछ और भी वाते छोड़नी चाहिये - तास खेलना, जूआ खेलना, इन सभी में व्यर्थ का समय बीत जाता है। इसके अलांवा टी.वी., मोबाईल, वीडियो गेम इसके अलांवा कितने लोगों की कुटेव ऐसी भी होती है कि पुस्तक पर नये-नये पूठा चढाते हैं उसमें समय बिगड़ता है। इससे भी पढने का समय बिगड़ता है। पुस्तक की सुरक्षा में समय बिगाड़ना

हितावह नहीं । इससे सरस्वती प्रसन्न नहीं होंगी । जिसे बार-बार बगीचे में जाने की टेव हो, वह भी कभी नहीं पढ सकता । जिसके मित्र अधिक हों उसमें भी महिलायें हो वह भी कभी नहीं पढ सकता । जिन्हे पढना हो उसे मित्रों से सर्प की तरह डरना चाहिये । इसलिये कि मित्र विद्या में विघ्नरुप होते हैं । जब आप पढने बैठते हैं तब एक या फिर दूसरा आया और क्या कर रहे हो ? आकर बैठे और गप्पा मारे । अभी दो लाईन पढें होगे कि दूसरा आया । अधिक मित्र विघ्नरुप होते हैं ।

विद्यार्थी को संयमी, सात्विक तथा एकान्त प्रेमी होना चाहिये । ऐसे विद्यार्थी के हृदय में विद्या स्थिर हो जाती है ।

देखे न मित्रों ! कैसी मजा की अनमोल मोती जैसी उपयोगी वातें शिक्षापत्री हमें सिखाती है । इसलिये प्रतिदिन आदर के साथ शिक्षापत्री का वांचन करके हृदय में उतारना ।

●

निर्मानी भक्त

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

मित्रों ! भगवान को भक्त कितना प्रिय लगता है यह स्वयं श्रीहरिने वचनामृत में कहा है कि जिन्हें भगवान का तथा संत का माहाम्य ज्ञान के साथ निश्चय हो तो सब कुछ सरल हो जाता है । भगवान के लिये कुटुम्ब का त्याग, लोक लज्जा का त्याग, राज्य का त्याग, सुख का त्याग, धन का त्याग कर देना चाहिये ।

इसी तरह के एक भक्त थे । उनका नाम था बेचर पंचोली वे स्वामिनारायण भगवान का दृढ भक्त थे । ब्राह्मण जाति में तथा ध्रांगध्रा के गाँव में पैदा हुये थे। हृदय में संत-हरिभक्तों का गुण रखते थे । सत्संग में रहकर अखंड भजन-भक्ति करते रहते थे ।

एकवार श्रीहरि उनके घर पधारे और उनकी परीक्षा लेने के लिये कहे कि बेचरभाई ? हमें ज्योतिष की पुस्तक चाहिये । लेकिन वह पुस्तक यहाँ नही है । तो उसे लेआईये मैं उसे वांचकर वापस कर दूंगा ।

बेचरभाई के समधी के साथ कुछ बोल-बाल हो गयी थी इससे कामकाज में अड़चन आती रहती थी समाधान की वात नहीं हो पा रही थी । जात के जीव भगवान के भक्त निरमानी होते हैं उनको किसी की कदर नहीं होती । बेचरभाई ने विचार किया कि इष्टदेव को पुस्तक चाहिये तो पुस्तक हम अवश्य देंगे । बेचरभाई अपने समधी के घर गये और कहे कि हमारे भगवान को ज्योतिष की पुस्तक चाहिये, आप पुस्तक दे दो । अब वह विचार करने लगा कि ये हमारे घर पुस्तक लेते क्यों आये ? इन्हें पुस्तक देना न देना मेरी इच्छा है । इन्हें मना भी नहीं करना है देना भी नहीं है ।

समधी से कहे कि वह पुस्तक हणवद के शिवराम जानी को दिया हूँ । बेचरभाई वहाँ से हणवद निकल गये । हणवद मे शिवराम जानी के घर पहुँच गये अपने समधीकी ज्योतिष की पुसत्क मांगे । तब शिवराम जानीने कहा कि वह पुस्तक तो मैने बहुत पहले दे दिया हूँ ।

बेचरभाई के समधी विचार करते रहे कि ये स्वामिनारायण के परम भक्त हैं पुस्तक देने के लिये खूब दौड़धाम करेंगे । ऐसा विचार ही कर रहे थे कि हलवद से बेचरभाई आकर दरवाजा खड़खड़ाये । भीतर आते ही कहे कि हमारे पास नहीं है मैने बहुत पहले वापस भेंजवा दिया हूँ । यह सुनते ही समधी ने कहा कि हमारी भूल हो गयी, वह पुस्तक तो बांकानेर के एक ब्राह्मण को दिया हूँ । वहाँ से आप ले लीजिये । बेचरभाई घोड़े को वांकानेर दौडाया । उन्हें तो भगवान की आज्ञा का पालन करना था । बिना अन्न-जल के उस पुस्तक के लिये दौडते रहे । यह विचार करते हुये वांकानेर पहुंच गये । वहाँ जाकर उस ब्राह्मण से पूछा कि हमारे समधी ने आपको जो ज्योतिष की पुस्तक दी है उसे आप वापस दे दीजिये । सुनते ही ब्राह्मणने कहा मैं तो करीब दोमास पूर्व ही पुस्तक वापस

कर दिया हूँ। बेचरभाई वहाँ से पुनः वापस अपने समधी के घर आये और समधी से कहे कि वांकानेर से तो आपको दो महीने पहले ही पुस्तक मिल गयी है। आप अपने घर में खोजिये। नहीं, हमारे दिमाग से निकल गया था, ख्याल आया कि मैं मोरबी के मकनजी भट्ट को वह पुस्तक दिया हूं। निश्चित ही उनके पास पुस्तक मिलेगी। अब वहाँ से मकनभाई के घर चल दिये। वहाँ पहुँचकर पुस्तक की बात किये, तुरन्त उन्होंने कहा कि वह पुस्तक तो एक हमे पहले ही मैंने वापस दे दी, आप व्यर्थ यहाँ तक धक्का खाये।

बेचरभाई पुनः वापस अपने समधी के घर आये, पुस्तक आप के घर ही है। आप कृपा करके अब पुस्तक दे दीजिये। तब समधीने कहा हाँ हाँ वह पुस्तक मेरे पास ही है। लेकिन आप मुझे ५०० दंडवत कीजिये तो आप को पुस्तक दूँगा। अब वे दंडवत करने को तैयार हो गये। लेकिन साथ में उनके मित्र भी गये थे जिनका नाम था लखीराम उन्होंने कहा शत्रु को दंडवत क्या करना अपने इष्टदेव को कीजिये। यह सुनकर बेचरभाईने कहा नही, अपने इष्टदेव के लिये दंडवत क्या मस्तक भी देना हो तो संकोच नहीं होगा, और वे दंडवत करने लगे।

यह देखकर समधी जी उनकी विवशता का ख्याल रखकर उन्हे पुस्तक दे दिये। अब वह पुस्तक लेकर भगवान स्वामिनारायण के चरण में रख दिये। श्रीहरिने कहा आप निश्चित महान है। आप हमारे लिये शत्रु को भी दंडवत किये। हमारे लिये कहाँ कहाँ तक दौड़ते रहे, कष्ट सहन करते रहे। भगवान खूब प्रसन्न हुये। तब वेचरभाईने कहा हे प्रभु आपकी प्रसन्नता ही हमारा जीवन है। यही हमारा सुख है।

ऐसे भक्तों से भगवान थोड़े भी दूर नहीं रहते। इसलिये हमें भी बेचरभाई की तरह भक्त बनने का प्रयत्न करना चाहिये। ऐसा करने से भगवान निश्चित प्रसन्न होकर कृपा करेंगे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया अहमदाबाद महा महोत्सव

ता. २१-२-१२ से २७-२-१२ तक

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण में पू. स.गु. स्वा. निर्गुणदासजी तथा पू. स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) विराजमान होंगे।

● भव्य शहेर चोर्यासी ● ठाकोरजी के पाटोत्सव अभिषेक ● छप्पन भोग अन्नकूट ● पारायण ● महापूजा ● समस्त धर्मकुल दर्शन

महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी एवं महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी

कथा स्थल : बलवंतराय होल, कांकरिया, अहमदाबाद

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-१५ ● शयन आरती २०-३०

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से -
"मृत्यु सुधारना सर्वथा शक्य है"
- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

मृत्यु ऐसा शब्द है जिसका नाम स्मरण होते ही भय होने लगता है। परंतु मृत्यु ही मात्र सत्य है। इसे टाला नही जा सकता। लेकिन गति सुधारी जा सकती है। भक्ति का सहारा लेकर इसे सुधारा जा सकता है। इसलिये मृत्यु की प्रतिदिन याद करके प्रतिदिन अन्तिम दिन ही मानना चाहिये। क्योंकि हमें पता नहीं मृत्यु कब आजाएगी। लोग मृत्यु को अमंगल मानते हैं। परंतु मृत्यु हमे सभी दु:खो से मुक्ति दिलाती है। संत मृत्यु को मंगलमय मानते हैं। प्रात: मृत्यु के समय लोगो को काल से डर लगता है वह इसलिये उनके खराब कर्म थे। मृत्यु के संमय मनुष्य पाप कर्म अवश्य याद आते हैं। जव व्यक्ति खराब कर्म करता है तब उसे डर लगता है, कहीं लोग मेरे कर्म को जान न लें। चौवीस घंटे वही याद करता है संयोग वश उसी समय मृत्यु आ जाय तो डरना स्वाभाविक है। इसलिये मृत्यु को सुधारने के लिये पुण्य कर्म करते रहना चाहिये। प्रभु की २४ घंटे याद करते रहना है शुद्ध मन से भगवान की भक्ति करना चाहिये। महाराज ने ग.म. के ३५ वें वचनामृत में कहे है कि ''आत्मदर्शने करीने कल्याण करवुं ते तो जेम तुंबड़ी बांधीने समुद्र तरवो जेवो कठण मार्ग दे'' इसी तरह शरीर से आत्मा अलग है। उपासना - भक्ति ही अन्तकाल में सहायक होती है। शरीररुपी रथ में इन्द्रिय रुपी घोड़े जुड़े हुये हैं। यदि भगवान की शरणागति हो जाय तो शरीर तथा इन्द्रिय के साथ मन प्रभुमय बन जाता है। भगवानने कहा है कि ''हमारी मर्जी के विना कुछ होना सम्भव नहीं है। आज दुनियां में सभी खराब कर्म हो रहे हैं। चोरी बेइमानी लूट, खून यह सभी होता है लेकिन इसमें भगवान की इच्छा नहीं रहती। यह मनुष्य अपनी दुर्बुद्धि के कारण करता है। इसका फल तो व्यक्ति को मिलना ही चाहिये। अपने घर का उदाहरण लें घर में इलेक्ट्रिक वायर से बिजली पसार होती है। जिससे लाईट, पंखा, फ्रिज, टी.वी., ये सभी चलती है। लेकिन क्या चलाना है वह व्यक्ति निश्चित करता है। इन सभी को चलाना भी संभव है और किसी को करंट भी दे सकते हैं। इसमें करंट का दोष नहीं है बल्कि आपके अन्दर का विचार ही मुख्य है। इच्छा शक्ति का प्रयोग करना प्रभु के हाथ में है। सब कुछ प्रभुने दिया है लेकिन पाप या पुण्य कर्म का उत्तरदायित्व प्रभु में नहीं है। जब मनुष्य पाप करे तो प्रभु के हाथ में है। सब कुछ प्रभु ने दिया है लेकिन पाप या पुण्य कर्म का उत्तरदायित्व प्रभु में नही है। जब मनुष्य पाप करे तो प्रभु का स्मरण करे तो निश्चित उससे दूर हो सकेगा। जब कोई काम करता है। और वर्ष के अन्त में हिसाब देने जाता है तब उसे डर लगता है कि कहीं मैने जो गल्ती की है उसका परिणाम खुल तो नहीं जायेगा। इसी तरह प्रभु के सामने डरते हुये कर्म करते रहने से जीवन सुधरता है। यदि व्यक्ति कर्तव्य निष्ठा के साथ अपने कर्म को करता है। ईश्वर उसका सहायक होते हैं। जब हम दो-चार दिन की यात्रा करने जाते हैं तो उस समय की मर्यादा का ख्याल, रखकर बड़ी शीघ्रता से काम पूर्ण कर देते हैं। इसी तरह विदेश की यात्रा में गये हो और आपका वीजा पूर्ण होता हो तो एक्सिडेन्ट इत्यादि का कारण दिखा कर वहाँ के नियम के अनुसार समयावधिबढा दी जाती है। परंतु इस पृथ्वी (मृत्यु लोक) नामक परदेश का बीजा पूरा होते ही स्वदेश तो जाना ही पड़ेगा। इसलिये प्रतिदिन मृत्यु का स्मरण करते रहना चाहिये। किसी भी काम को करे तो स्वच्छ मन से करना चाहिये। भजन-भक्ति का सहारा लेकर भगवान से प्रार्थना करनी चाहिये कि हे प्रभु ! आप अपनी शरण में रखियेगा। आप हमें इतनी शक्ति देना कि हम अपनी मृत्यु को सुधार सकुं जिससे अन्तकाल भी सुधर सके।

●

अपना धर्मकुल
- परमार भूमिका भगवानजीभाई (हालार-सुरत)

'उत्तर कोशल देश को पवित्र करने वाली सरजू नदी है जिसके किनारे पर रमणीय सुन्दर मखोड़ा घाट है। उसी के समीप में अक्षरधाम के समान छपैयाधाम है जहाँ पर प्रभु घनश्याम महाराज प्रगट हुये थे। महाराजने तप तथा त्याग का सहारा लेकर ११ वर्ष की उम्र में छपैया का परित्याग किया था। बाद में बड़े भाई रामप्रतापजी तथा छोटेभाई इच्छारामजी एवं सुवासिनी भाभी महाराज के वियोग में आंसु गिराती रही।

एक दिन मयातितानंद स्वामी महाराज की आज्ञा से

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया धर्मप्रवास

(ता. २१-१-२०१२ से ता. १-२-२०१२ तक)

भगवान स्वामिनारायण का सर्वजीव हितावह संदेश लेकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज विश्व के कोनेकोने पहुंचा रहे हैं। सारे विश्व में अपने सत्संगी बसे हुये है, उन सभी को दर्शन का सुख देने के लिये तथा आशीर्वचन का लाभ देने के लिये श्री नरनारायणदेव तथा श्रीहरि के चरणों में उन सभी की निष्ठा दृढहो तथा शुद्ध उपासना और भक्ति करें इस शुभ भावना से विचरण कर रहेहैं।

ओस्ट्रेलिया के भक्तों के प्रेम भरे आमंत्रण तथा आग्रह के कारण प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यहाँ पर संत मंडल के साथ पधारे। ता. २२-१-२०१२ को लम्बी हवाई यात्रा के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री मेलबोर्न पधारे थे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेलबोर्न मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मेलबोर्न शहर में रहनेवाले हरिभक्तों के पुरुषार्थ से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से संतो की प्रेरणा से यहाँ पर भव्य दिव्य मंदिर का निर्माण कार्यपूर्ण हुआ। प.पू. आचार्य महाराजश्री यहाँ पर विगत ४ वर्षो से आकर हरिभक्तों को सत्संग का बल तथा मंदिर निर्माण की प्रेरणा देते रहे। भुज मंदिर से पू. महंत स्वामी तथा बड़े संतो की प्रेरणा मिलती रही है। १९ महीने के कम समय में सुंदर मंदिर तैयार हो गया। इस मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा ता. २४ से २८ तक बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुई। पंचदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा स्वा. गोलोकविहारीदासजी तथा स्वा. कृष्णस्वरुपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। पोथीयात्रा, शोभायात्रा, हरियाग, अभिषेक-अन्नकूट इत्यादि कार्य सम्पन्न हुआ। १५ संतो के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रतिदिन कथा में विराजमान होकर दर्शन का लाभ देते रहें। अमेरिका, अफ्रिका, भारत, यु.के. तथा आस्ट्रेलिया की सीमा न रही। मेलबोर्न में सत्संग समुदाय समिति तथा युवानों की सेवा सभी के हृदय को जीत लिया। भुज से पधारे हुये पू. महंत स्वामी सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुये उनकी सेवा की खूब प्रशंसा की थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आस्ट्रेलिया खंड में प्रथम मंदिर निर्माण होने से खूब प्रसन्न हुये थे। सभी को एक सूत्र में रहने की आज्ञा किये थे। अभी पर्थ, एडीलेड, सीडनी इत्यादि स्थलों पर मंदिर निर्माण कार्य चल रहा है। यहा के हरिभक्तों को यहाँ से प्रेरणा लेनी चाहिये। प.पू. आचार्य महाराजश्री हरिभक्तों को आनंद प्रदान करके वहाँ से सीडनी पधारे थे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी के सभी हरिभक्त प.पू. महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री के आगमन से हरिभक्तों के आनन्द की सीमा न रही। ता. २७ को भक्तों ने मंदिर में ही प.पू. महाराजश्री का स्वागत समारोह रखा था। पू. महाराजश्रीने अपने प्रवचन में कहा कि हम तो अपने घर ही आये हैं। ऐसा पारिवारिक आत्मीय भाव सुनकर भक्त आनन्द विभोर हो गये थे। २८ ता. को प्रातः काल से ही हरिभक्तों के घर पदार्पण करके पेरामेटा विस्तार में वसंत पंचमी प्रसंग पर आयोजित ''श्री स्वामिनारायण जन्म जयन्ती महोत्सव'' के अवसर पर सभी ने आशीर्वाद का लाभ लिया था। अपना यह मंदिर ब्लेक टाउन विस्तार में ही है लेकिन कुछ दूरी पर रहने वाले सत्संगी विद्यार्थी साधन या समय के अभाव में नही आसके है इसलिये हम उन्हीं के यहाँ चलेंगे ऐसा पू. महाराजश्री ने जब कहा तो सभी में आनन्द की लहर दौड़ गयी। श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। सभा में पू. पी.पी. स्वामी (छोटे) तथा पू. राम स्वामी ने सत्संग का लाभ दिया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को उपदेश दिया कि आप सभी यहाँ रहकर शिक्षापत्री की आज्ञा के अनुसार वर्तन करेंगे तो सुखी रहेंगे। ता. २९ को मंदिर में भव्य शाकोत्सव किया गया था। सर्वप्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने शाग का वघार किया। सभी हरिभक्त आनन्द के साथ भोजन का प्रसाद लिये। ता. ३०, ३१, १ को पू. महाराजश्री प्रातः से सायंतक प्रत्येक हरिभक्तों के घरों में पदार्पण किये सायंकाल मंदिर में सत्संग सभा का आयोजन किया गया। वहाँ से हरिभक्तों द्वारा भावभीनी विदाई लेकर प.पू. महाराजश्री स्वदेश पधारे। प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ इस यात्रा में पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत), पू. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), तथा पार्षद वनराज भगत थे।

શ્રી સ્વામિન

ાયણ મંદિર-મેલબોર્ન મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

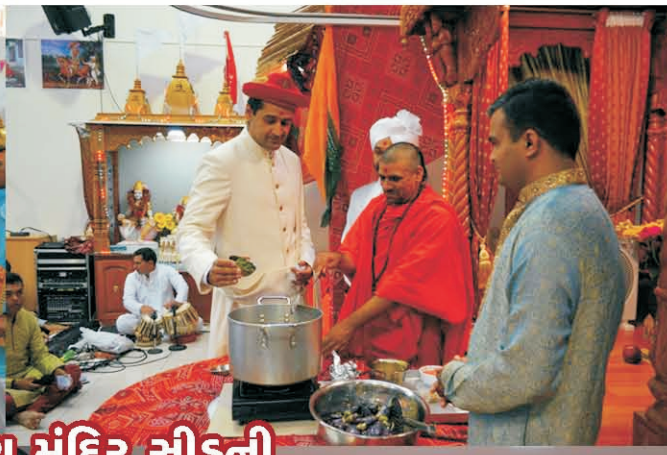

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર સીડની

चारोधाम की यात्रा करने निकल पड़े । सरयू नदी में स्नानादि क्रिया कर रहे थे उसी समय महाराज के दोनो भाईयों को महाराज की प्रतिक्षा करते देखा । दोनो भाईयों का साधु स्वभाव देखकर बड़े आनंदित हुये । भाईयों से दुःख का कारण पूछा । भाईयों ने अपने पूर्ववृत्तान्त को कह सुनाया ।

मयातितानंद स्वामी बात सुनकर आश्चर्य चकित रह गये । स्वामीने कहा मैं उन के विषय में बताउ तो आप पहचान जायेंगे ? हाँ स्वामी कहने लगे उनके गाल में गडढे पड़ते है ? पेट में त्रिबली होती है ? उनके चरण में सोलह चिन्ह है ? यह सब सुनते ही भाई कहनेल गे कि हाँ वे ही हमारे भाई है, अब आप बताइये वे कहां है ।

१२ वर्ष की तपस्या आजपूर्ण हो गयी । जिसे महाराज मां मानते थे ऐसी सुवासिनी भाभी रातदिन रोती रहती थी । जीव के विना शरीर आज वीज वाली हो गयी थी । पूरे परिवार को शान्तना देकर सभी को साथ लेकर गुजरात आये ।

प्रिय भक्तजन इस धैर्य का फल आप लोग देखें । जो १२ वर्ष तक महाराज की प्रतिक्षा में चकोर पक्षी की तरह राह देखते रहे ऐसे धर्मकुल को महाराज ने हम सभी के लिये दिया है । ऐसे धर्मकुल में सभी की निष्ठा तथा दृढ विश्वास होना आवश्यक है ।

महाराज ने वचनामृत में कहा है कि स्नेह यदि आत्मीयजनों में हो तो विश्वास दृढ होता है । इसी तरह हमें भी महाराजने जो धर्मकुल दिया हैँ उसमें दृढ विश्वास के साथ दृढ निष्ठा रखेंगे तो ही जीवन की सार्थकता होगी ।

●

अपनी गादीवालाजी

- सभा की अमुक सत्संगी बहन

हम सभी सत्संगी बहनों की तरफ से स्वामिनारायण भगवान की अति कृपा मानती हूँ कि उन्होंने हम सभी के लिये समर्थ गुरु प्रदान किये है । सभी गादीवाली अच्छी थी लेकिन वर्तमान गादीवाला सामर्थ्य शालिनी है, यह हमारा मन्तव्य नहीं है बल्कि समस्त महिला समुदाय का मंतव्य है । कोई गादीवालाजी की प्रसंशा करे तो उन्हें अच्छा नहीं लगता । बीच में ही रोक देती है । वे कहती है कि मैं इस पद पर पुजाने के लिये आरुढ नहीं हूँ । मैं अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने का प्रयास करती हूँ । मेरा काम है । सत्संगी बहनों को श्री नरनारायणदेव के माहात्म्य को समझाना । कितनी शान्त प्रकृति है । पूनम हो या एकादशी चाहे कितनी भी भीड हवेली में बहनों की होती है फिर भी सभी से बड़ी प्रसन्नता के साथ मिलती है । सत्संग का उत्तरदायित्व तो है ही इसके साथ परिवार का कितना बड़ा उत्तरदायित्व है । लालजी महाराजश्री तथा श्रीराजा का कितना ध्यान रखती है । उनके जीवन संवारने में अपना समय देती है । कच्छ में हमें जाना हो तो एक रात वहाँ रुकते हैं । आराम करते है लेकिन गादीवालाजी प्रातः ३ बजे निकल जाती है सायंकाल ७ बजे तक वापस आजाती है क्योंकि लालजी महाराज तथा श्रीराजा को अकेले नहीं छोड़ती । धनुर्मास में सभी ने देखा कि ५-२५ पर आजाती और मंगला आरती करके श्रृंगार आरती के बाद घर जाकर लालजी महाराजश्री को तथा श्रीराजा को स्कूल भेंजकर हरिभक्तों के घर पदार्पण करने निकल जाती है जब लालजी एवं श्रीराजा स्कूल से आते हैं उससे पहले घर आ जाती है । मैं एक वर्ष से उनकी दैनिक चर्या देख रही हूँ । अभी थोड़ा कार्यभार बढा ही है गाँव गाँव में सत्संग तथा प्रति एकादशी को २-४ बजे सायंकाल सभा करती है । प्रति महीने के पहले शनिवार को हर्षद मंदिर में सभा, अन्तिम शनिवार को निकोल में सभा, नवम को नारायणघाट में सभा अहमदाबाद के नजदीक के सभी मंदिरों में सभा का आयोजन किया जाता है । प्रायः सभी जगहों पर उपस्थित होती है । ऐसे गाँवो में भी जाती है । जहाँ ४-५ सत्संगी होती है । मेरे कर्तव्य के विषय में महाराज हमसे पूछेंगे तो हम क्या कहेंगे ? महाराज श्री की पत्नी गादी वाला होने से काम नहीं चलेगा । कर्तव्य तो करना ही पड़ेगा । महिला वर्ग का सत्संग दृढ़ होगा तो बच्चे संस्कारी होंगे ।

ऐसा विचार गादीवाला का ही हो सकता है । वे कह सकती है मेरे पास समय नहीं है, लालजी तथा श्री राजा स्कूल है, उनके स्कूल का काम बाकी है घर का काम है, कुछ भी कहके बहाना कर सकती है लेकिन घर का इस तरह मेनेजमेन्ट इस तरह का करती है कि सभी का कार्य पूर्ण हो जाता है । कच्छ जाती है ६ घन्टे गाड़ी में बैठना फिर सभा में बैठना पुनः वापस आना और घर आकर सम्पूर्ण कार्यभार पूरा करना । ऐसी पूज्या श्री गादीवालाजी के लिये मेरे पास कोई शब्द ही नहीं हैा । प.पू. आचार्य महाराजश्री जब से गादी पर बैठे तब से अकल्पनीय वृद्धि हुई है । गादीवालाका

सरल स्वभाव तथा निर्मानीपना तथा उनका अथक परिश्रम वर्णनीय नहीं है।

मै सत्संगी बहनों की तरफ से प.पू. गादीवालाजी के चरण में कोटि कोटि वन्दन करती हूँ। इसलिये कि उनके निर्मानी पना का ऐसा भाव है इस तरह का धैर्य है। उनका कोई बखान करता है तो कहती है कि हमें आप लोग क्यों नरक में डाल रही हैं । हम सभी साथ में भगवान का गुणगान करें, सत्संग का प्रचार करे, सभी में अच्छेगुण आवें, सभी का विकास हो सभी के संस्कार अच्छे बने यही हमारी इच्छा है। सत्संग के लिये तथा भजन भक्ति के लिये कोई उम्र की मर्यादा नहीं होती । पूज्या गादीवालाजी के वर्णन के लिये मेरे पास कोई शब्द नहीं है । श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना कि गादीवालाजी का स्वास्थ्य अच्छा रहे और उनकी लम्बी आयु प्रदान करे, क्योंकि ऐसे गुरु की हम सभी को बहुत जरुरत है भाग्य से ऐसे गुरु मिलते है। हम सभी बड़े भाग्यशाली है।

His Holiness Acharya Maharaj
Shri Koshalendraprasadji Pande

प्रति श्री,
महंतश्री / कोठारी श्री / सत्संगी समस्त
अमदावाद अने मूळी देश

ता. ०९/०१/ २०१२

અત્રે અમદાવાદશ્રી નરનારાયણ દેવના ચરણકમળથી અમારા હેતપુર્વકના જયશ્રી સ્વામિનારાયણ

શ્રી હરિની કૃપાથી આપ સર્વ કુશળ હશો.

વિ.જણાવવાનુંકે આપણા ગામડાઓમાં સત્સંગની વિશેષ પ્રવૃતિ થાય તથા આપના ગામની માહિતી અત્રેના મુખ્ય મંદિર સુધી પહોંચે એવા હેતુથી અત્રેથી શ્રીનરનારાયણદેવ યુવક મંડળના કાર્યકર્તાઓને ગામડાઓમાંજવા આદેશ કરેલ છે. તો યુવક મંડળના યુવાનો સત્સંગઅર્થે આપના ગામમાં આવે તો એમને જરૂરી માહિતી તથા સહયોગ પુરો પાડશો.આપણા સૌનો હેતુ સાથે મળી સત્સંગ કરી મહારાજને રાજી કરવાનો છે.તો આ યુવાનોને યોગ્ય સહકાર આપી તથા જરૂરી સુચનો પણ આપી આ કાર્યમાં સહભાગી થશો. શ્રીનરનારાયણ દેવ સર્વેનુ સર્વપ્રકારે મંગળ કરે એ જ પ્રાર્થના.

શુભાશીર્વાદ સહ

Shree Swaminarayan Mandir, Ahmedabad-1
Tel: 079 2212 3835

Shree Swaminarayan Bagh,
Ahmedabad-52
Tel: 079 2747 8070

सत्संग समाचार

इसंड (कलोल) में भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. भंडारी स्वामी रामचरणदासजी के संकल्प से तथा स.गु. स्वा. श्री वल्लभदासजी तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) के मार्गदर्शन से तथा गाँव के समस्त सत्संग के सहयोग से ता. २४-१२-२०११ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

४००० से भी अधिक भाविको ने शाकोत्सव का लाभ लिया। इस प्रसंग पर गाँव के तथा-आसपास के गाँव के कई भाविक भक्तोंने तन, मन, धन से सेवा की थी। माणेकपुर के युवक मंडल द्वारा सुदंर कीर्तन का रस पान करवाया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का शुभ आगमन हुआ। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शब्जी का अलौकिक बघार करके वहाँ उपस्थित सभी भक्तों को दर्शन का लाभ दिया । इस प्रसंग पर स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, कालुपुर महंतश्री । स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री), ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव के पूजारी) आदि संतोने अपनी भावना प्रगट की। स्वा. ऋषिकेशप्रसाददासजी तथा हरिभक्तों की सेवा प्रसंशनीय थी। - शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी

अंबोड गांव में भव्य शाकोत्सव

दरबारी अंबोड गाँव (मीनी पावागढ) ता. ७-१-१२ को भव्य शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) के मार्गदर्शन में धूमधाम से मनाया गया।

सत्संग के प्रसंग पर अंदाजित ६००० हजार हरिभक्तो की उपस्थिति में भव्य शाकोत्सव मनाया गया । समग्र आयोजन के यजमान प.भ. आर.एम. बाघेला साहब के परिवारने लाभ लेकर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो का आशीर्वाद प्राप्त किया।

जिसमें रमेशभाई प्रजापतीने सुंदर कीर्तन भक्ति का आयोजन किया। स.गु. शा. चैतन्यस्वामीने कथा वार्ता का सुदंर लाभ दिया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सब्जी का अद्‌भुत बघार किया। इस प्रसंग में स.गु. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव के पूजारी) स.गु. राम स्वामी (आदरज) आदि संतगण पधारे थे। संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने ग्रामजनो को सत्संग में प्रवृत्त रहने की शीख दी थी।

- मोहनभाई स्वामिनारायण पेट्रोलपंप वाले

वक्तापुर गाँव (साबरकांठा) अलौकिक शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. नारायणघाट महंतश्री की प्रेरणा से गाँव में ता. ३०-१२-२०१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। स्वयं शाकोत्सव का बघार करके हजारो भाविकों को दर्शन का महालाभ दिया था। शाकोत्सव के यजमान प.भ. बाबुभाई (अश्वमेघ कन्ट्रकशन) आदि परिवारने प.पू. महाराजश्री का पूजनअर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किए। सभा में स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने हरिभक्तों को कथा वार्ता का लाभ दिया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की प्रेरणा थी।

- स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी

कुकरवाडा गाँव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में तथा शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से ता. ३१-१२-११ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

समस्त गाँव के सहयोग तथा सेवा से सुंदर आयोजन किया गया। प्रथम सभा में स.गु.शा. राम स्वामी (कोटेश्वर) तथा स.गु.शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने कथामृत पान करवाकर हरिभक्तों को सुंदर लाभ दिया । प.पू. बड़े महाराजश्री अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संत मंडल के साथ पधारे थे। तथा शब्जी का अलौकिक बघार किया । ४००० भाविकोने

शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हो गए थे।

– स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी

नवावाडज मंदिर में परंपारगत शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से ता. ८-१-१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

इस प्रासंगिक सभा में स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपने (कोटेश्वर) हरिभक्तों को कथा का रसपान करवाया था। उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके सभा में पधारे थे। जिस में भव्य शाकोत्सव का स्वयं बघार किया था। सभी संत मंडल की तरफ से अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने शाकोत्सव की महिमा कही थी। अंत में प.पू. महाराजश्री तन, मन तथा धन से सेवा में जुडे सभी भक्तों को आशीर्वाद दिये थे। इस शाकोत्सव में नवा वाडज तथा आसपास के विस्तार के हरिभक्तों ने भी लाभ लिया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रसंशनीय थी। – श्री नरनारायणदेव युवक मंडल प्रतिनिधि

चांदखेडा में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा संतो तथा हरिभक्तों के संपूर्ण सहयोग से ता. ८-१२-१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

धर्मकुल के आश्रित पूज्य संतो के सानिध्य में स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा स.गु. नीलकंठ स्वामीने कथावार्ता करके शाकोत्सव तथा धर्मकुल की महिमा हरिभक्तों को समझाया। सभीने समूह में शाकोत्सव का प्रसाद लिया था। सांख्ययोगी बाई तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। – घनश्यामभाई आदरभाई पटेल, चांदखेडा

सोजा गाँव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा से सोजा गाँव में ता. १२-१-१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गाय।

समस्त गाँव के हरिभक्तों का संपूर्ण साथ सहकार से इस गाँव में भव्य आयोजन किया था। प्रासंगिक सभा में स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने कथा में शाकोत्सव की अद्‌भूत महिमा हरिभक्तों को समझाया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का शुभ आगमन होते ही उनका स्वागत हरिभक्तों ने धूमधाम से किया। कई नये मुमुक्षुओंने कंठी धारण करके गुरु मंत्र लिया। शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने गुरु मंत्र की महिमा समझायी थी।

पू.प.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव का बघार करके आशीर्वाद प्रदान किए। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सुंदर थी।

– विपुलभाई कड़ीया

महादेवनगर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से तथा संत मंडल के मार्गदर्शन से ता. ६-१-१२ को महादेवनगर मंदिर में भव्य शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

प्रासंगिक सभा में तीन संतोने भगवान श्रीहरि का माहात्म्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य कहा। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। जहाँ शब्जी का बघार करके भक्तों को दर्शन का महालाभ दिया। स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद मंदिर महंतश्री) तथा स.गु.शा. आनंदप्रियदासजी स्वामीने कथावार्ता का लाभ दिया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने इस प्रसंग में सेवा करनेवाले सभी हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये। समग्र उत्सव के आयोजन में महादेवनगर सत्संग समाज की सेवा प्रेरणारुप थी। इस प्रसंग पर महामंत्र धून भी की गई।

– स.गु.शा. चैतन्यस्वरुपदासजी

शियाल (ता. बावला) गाँव में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्रीहरि के चरण कमलों से पूण्य भूमि शियाल गाँव में भव्य शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस शाकोत्सव प्रसंग पर जेतलपुर से पू. स.गु.पी.पी. स्वामी तथा वयोवृद्ध पूज्य श्याम स्वामी पधारे थे। ग्रामजनो को कथावार्ता का सुंदर लाभ देकर शाकोत्सव मनाया गया।

– कोठारीश्री शियाल

ट्रेन्ट गाँव में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के पुज्य महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ३१-१२-११ को श्री स्वामिनारायण मंदिर में महापूजा तथा शाकोत्सव मनाया गया । ठाकुरजी की महापूजा की गई । संतोने महापूजा विधिकरवाई । जिस में कई यजमानोने लाभ लिया । जेतलपुर से पधारे पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा कलोल मंदिर के महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी आदि संतोने कथा वार्ता का लाभ दिया था। पू. आत्मप्रकाशदासजी स्वामीने शब्जी का वघार करके भक्तो को आशीर्वाद दिये। इस प्रसंग पर पाणी, मोटा, उभडा, जरवला, मांडल तथा शेर आदि गाँव के हरिभक्तो ने कथावार्ता का लाभ लिया। – शा. भक्तिनंदनदास

कलोल (पंचवटी) में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी में ता. ३-१-१२ को धूमधाम से शाकोत्सव मनाया गया।

इस दिव्य शाकोत्सव में जेतलपुर, महेसाणा, जमीयतपुरा, माणसा, कांकरिया, छपैया, मथुरा, अहमदाबाद, असारवा गुरुकुल, नाथद्वारा, इडर, मुली, चराडवा मंदिर के महंतश्रीने पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिया। ता. ३-१-१२ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी की आरती करके सभा में पधारे। बड़ी सी कढ़ाई में सुगंधित तेल में बैगन तथा मसालो का अद्‌भुत बघार किया। प्रासंगिक सभा में नव निर्मित मंदिर में भूमिदान में भी कई हरिभक्तों ने अपना योगदान करके प.पू. बड़े महराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किये । अंत में समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद देते हुए कहा शब्जी का वघार तो हमने बहुत किए लेकिन कलोल पचंवटी में जो बघार किया वह सबसे सार्थक हुआ है। शाकोत्सव के यजमान प.भ. डाह्याभाई मणीलाल पटेल (सरपंच) मोखासण वालाको प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये। ५००० हजार से भी अधिक भाविकोने शाकोत्सव का लाभ लिया था। इस प्रसंग में कलोल तथा आसपास के गाँव के हरिभक्तों के सहयोग से तथा मंदिर के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से समग्र आयोजन किया था।

– भक्तिनन्दन स्वामी, प्रविणभाई, प्रकाशभाई पटेल

बालवा गाँव में सत्संगिभूषण पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से बालवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ७ वाँ श्रीमद् सत्संगि भूषण पारायण धूमधाम से मनाया गया था। जिस के वक्तापद पर यज्ञप्रकाशदासजी (काकंरिया मंदिर कोठारी) थे और सहिंतापाठ में स्वा. उत्तमप्रियदासजी थे। समग्र उत्सव का संचालन कार्य स्वा. भक्तिनन्दनदासजी (जेतलपुरधाम) ने किया था।

ता. २५-१२-११ को प्रथम यजमान श्री कांतिभाई चौधरी तथा अशोकभाई चौधरी थे। पोथीयात्रा उनके घर से निकल कर मंडप तक आयी थी । इस प्रसंग पर क्रमशः समस्त धर्मकुल का पदार्पण हुआ था। सर्व प्रथम प.पू. बड़े महाराजश्री ता. २८-१२-११ को प.पू. बड़ी गादीवाला ता. २९-१२-११ को, प.पू. लालजी महाराजश्री ता. ३०-१२-११ को, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा ३१-१२-११ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सभी को दर्शन का तथा आशीर्वाद का अलौकिक सुख प्रदान किये थे। प्रत्येक मंदिरों से संत पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे।

प.पू. लालजी महाराजश्री जब पधारे उस समय दिव्य स्वागत किया गया था। यहाँ की बालक मंडल ने बेफर का सुन्दर हार बनाकर गले में पहनाया था। इसी तरह बालिका मंडली ने प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी को ड्रायफ्रूट का हार पहनाकर स्वागत किया था।

ता. ३१-१२-११ को अन्तिम दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। मंदिर में आरती उतारकर सभा मंडप में पधारकर अलौकिक दर्शन का लाभ दिये थे । यजमान परिवार का सन्मान करके बालवा गाँव के हरिभक्तों पर खूब प्रसन्न हुए थे। समग्र आयोजन श्री नरनारायणदेव युक मंडल

ने किया था । श्री नरनारायणदेव युवक मडंल श्री स्वामिनारायण मासिक आजीवन तथा वार्षिक सदस्य बनाकर धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त किये हैं । - शा. भक्तिनन्दनदासजी, जेतलपुरधाम तथा बालवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

जेतलपुरधाम महान पवित्र तीर्थोत्तर अक्षरमहोलवाडी में सत्संग सभा

सभी के संकल्प को पूर्ण करने वाले जेतलपुरधाम में प्रत्यक्ष बिराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराजश्री के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ३१-१२-११ को अक्षर महोल वाड़ी में सुन्दर सत्संग सभा सम्पन्न हुई । प्रथम सत्संग सभा, बाद में संतोने प्रेरक प्रवचन किया । समग्र आयोजन जेतलपुर के युवान संत महंत के.पी. स्वामी तथा वाडी के संचालक हरिॐप्रकाशदासजीने किया था ।

- शा. भक्तिनन्दनदासजी

जेतलपुर महिला मंडल द्वारा खिचडी उत्सव

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम में महिला मंडल द्वारा खिचड़ी उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । सभी प्रसाद लेकर आनंदित हुये थे । समग्र आयोजन सां. नर्मदाबाने किया था ।

जुंडाल गाँवमें श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाहन पारायण

श्री नरनारायणदेव पीधाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स्वा. राजेन्द्रप्रसादजी की प्रेरणा से जुंडाल मंदिर में २-१-१२ से ६-१-१२ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा सम्पन्न हुई थी ।

पारायण के वक्ता शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदास थे । साथ में स्वामी हरिप्रियदासजी भी कथा के वक्ता थे । बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर कथा का श्रवण किये थे ।

पांच दिन तक प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महराजश्री प.पू. बड़ीगादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी यजमान परिवार के आमंत्रण पर पधारकर बहनों को दर्शन का सुख प्रदान की थी ।

सभा संचालन मूली के शा. सत्यप्रकाशदासजीने किया था । प्रसंग के यजमान श्री लालभाई, श्री बाबूभाई, श्री केशाभाई, श्री कांतिभाई इत्यादि लोग थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण में भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. १-१-१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर जेतलपुरधाम से पू. स.गु.शा.स्वा. पी.पी. स्वामी, शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी, श्याम स्वामी, भक्तिनन्दनदास तथा अहमदाबाद मंदिर से महंत स्वामी के शिष्य मुनि स्वामी इत्यादि संत मंडल पधारे थे । पू. पी.पी. स्वामीने सुमधुरवाणी में कथा का रसपान कराया था ।

भक्तों के आमंत्रण पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । उनके आगमन पर युवक मंडल द्वारा भव्य स्वागत किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्री मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर भव्य शाक का वघार किये थे । सभा में लोग धन्यता का अनुभव कर रहे थे । इस प्रसंग पर यजमान परिवार श्री प्रकाशभाई गज्जर, श्री जगदीशभाई गज्जर ने लाभ लिया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । - शा. भक्तिनन्दनदासजी तथा पीयूष पारेख

श्रीप्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से श्री प्रभा हनुमानजी का पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर श्रीराम कथा का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी थे । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री पुरुष वर्ग को तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी बहनों को दर्शन का लाभ एवं आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी । इस प्रसंग पर शाकोत्सव का भी आयोजन किया गया था । शाग का वघार करके प.पू. बड़ी गादीवालाजीने बहनो को अद्‌भुत दर्शन का लाभ दिया था । मारुति यज्ञ भी इस अवसर पर सम्पन्न हुआ था । सभी भक्तजन सेवाका लाभ लिये थे । - विजय स्वामी महंतश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा माणसा के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ पर भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । प.पू. आचार्य

महाराजश्री ने शाग का बघार करके सभी को आनन्दित किया। संतोने कथा प्रवचन तथा कीर्तन-भजन किया बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। शाकोत्सव के मुख्य यजमान श्री जीतुभाई सांकलचंद पटेल थे, इन के ऊपर प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे। अनेकों धाम से संत पधारे हुये थे। माणसा के अगल-बगल के हरिभक्तोने इस उत्सव में उत्तम सेवा की थी। चंद्रप्रकाश स्वामी के मार्ग दर्शन में श्री नरनारायण युवक मंडल ने सेवा की थी।

- कोठारीश्री माणसा

मणीयोर में ६ठ्ठां पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर के महंत स्वामी की प्रेरणा से मणीयोर के मंदिर का ६ठ्ठा पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। जिसके मुख्य यजमान हसमुखभाई पटेल थे। श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती संतो की उपस्थिति में हुई थी।

अहमदबाद, सोकली, टोरडा, हिंमतनगर इत्यादि स्थानों से संत पधारे हुये थे। यहाँ के महंत स्वामी का तथा अन्य संतो का यजमान परिवार द्वारा साल ओढाकर बहुमान किया गया था। सभी आगन्तुक प्रसाद लिये थे। बाद में मूर्तियों के साथ संत-हरिभक्त शोभायात्रा में सामिल हुये थे। शा. हरिजीवनदासजीने सभा संचालन किया था। सत्य संकल्पदासजी तथा श्रीजीप्रकाशदासजीने उत्सव की व्यवस्था संभाली थी। भोजनालय की व्यवस्था में वासुदेव स्वामी थे। - कोठारीश्री

वावोल मंदिर में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण

वावोल गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कार्तिक शुक्ल-५ से नवमी तक श्री अंबालाल पटेल की तरफ से श्रीमद् सत्संगिभूषण का आयोजन किया गया था। वडनगर के महंत शा. नारायणवल्लभस्वामीने सुन्दर कथा का रसपान कराया था। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री भी पधारकर आशीर्वाद दिये थे। सभी मंदिर के संत पधारकर प्रेरक प्रवचन किये थे। सभा संचालन शा. विश्वप्रकाशासजीने किया था। सहिंतापाठ श्रीवल्लभदासजीने किया था (इसंड), तथा घनश्याम स्वामीने किया था। इस प्रसंग पर बड़ी संख्या में हरिभक्त पधारे हुये थे। - स्वा. नारायणवल्लभदासजी, वड़नगर

वडनगर गुरुकुल में भव्य शाकोत्सव

यहाँ के गुरुकुल में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से हरिभक्तों ने ३-१-१२ को शाकोत्सव का आयोजन किया था। इस प्रसंग पर महंत स्वामीने वृद्ध भक्तों को साल ओढाकर सन्मानित किया था। हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। मंदिर के ट्रस्टी भी इस अवसर पर उपस्थित होकर सेवा में लगे थे।

- नवीनभाई भावसार

मांडल मंदिर में प्रथम शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मांडल गाँव में १३-१-१२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग पर जेतलपुर धाम, महेसाणा, जमीयतपुरा से संत पधारे थे। सभा में धुनि कीर्तन के बाद भक्तिनन्दन स्वामीने कथा किया था। श्याम स्वामीने शाग का वघार किया था। वहाँ की बहनो ने रोटी बनाने का कार्य किया था। सभी प्रसाद लेकर बिदाहुए।

- महंत स्वामी के.पी. जेतलपुर धाम

कूंजाड गाँव में शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. आत्मप्रकासदासजी एवं पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से २२-१-१२ को कूजाड गाँव में शाकोत्सव मनाया गया था। इस के मुख्य यजमान विजयभाई पटेल थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कीर्तन भजन किये। बाद में भक्तिनन्दन स्वामी तथा शा. हरिॐप्रकाशदासजी एवं कडी के संतने महाराज के लीला चरित्र की कथा की थी। पू. पी.पी. स्वामीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे। आयोजन का कार्यभार श्याम स्वामी, के.पी. स्वामी, वी.पी. स्वामीने सम्हाला था।

स.गु. वासुदेवानंद स्वामी की जन्म भूमि मालपुर मंदिर में पाटोत्सव

ब्र. स्वा. वासुदेवानन्द वर्णी की जन्मभूमि मालपुर में प.प.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर का १० वाँ पाटोत्सव श्री साकलचंद पटेल एवं रई बहन साकल चन्द्र की तरफ से सम्पन्न हुआ.

इस प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों सम्पन्न हुई थी । गवैया स्वामी के शिष्य मंडल ने कीर्तनगाया था । सभा में माधव स्वामी तथा अखिलेश्वर स्वामीने प्रासंगिक प्रवचन किया था । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस अवसर पर स्वा. हरिजीवनदासजी तथा स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी उपस्थित थे ।

– शा. सर्वेश्वरदासजी

आकरुंद गाँव में तृतीय शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तृतीय शाकोत्सव मनाया गया । मंदिर के निर्माता स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा युवक मंडल ने यह आयोजन किया था । सभा में माणसा के महंत स्वामीने व्याख्यान दिया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों शाग का वघार किया गया था ।

प्रासंगिक सभा में अमदावाद मंदिके महंत स्वामी, जेतलपुर धाम के महंत स्वामी, मूली के महंत स्वामीने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । संचालन सुखनंदन स्वामीने किया था । स्वागत प्रवचन अखिलेश्वरदासजीने किया था ।

इस प्रसंग पर सभी मंदिर से संत पधारे थे । शाकोत्सव की व्यवस्था स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, सर्वेश्वरदासजी, बाल स्वरुपदासजी, विश्वेशवरदासजीने की थी । यहाँ के हरिभक्तों की सेवा सराहनीय है । प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन श्री हितेन्द्रभाईपटेलने किया था । मुख्य द्वार के लिये प्रेमजीभाई ने १५१००० दान की घोषणा की थी । बाद में सभी लोग प.पू. महाराजश्री का चरण स्पर्श करके प्रसाद ग्रहण किये थे।

शा. सर्वेश्वरदासजी

समौ गाँव में श्री रामचरित सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. देवप्रकाशदासजी एवं छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से समौ गाँव में बिराजमान हनुमानजी के सानिध्य में श्री रामचरित मानस कथा का आयोजन किया गया था । कथा के वक्ता शा.स्वा. रामकृष्णदासजी थे ।

कथा में परम पूज्या गादीवाला तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारकर बहनोको दर्शन आशीर्वाद प्रदान की थी । कथा की पूर्णाहुति पर प.पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा राजेश्वरानंदजी ब्रह्मचारी एवं आनन्द स्वामी इत्यादि संत भी पधारे थे । सभी ने प्रेरक प्रवचन किया था । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

– स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी

वावोल गाँव में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी एवं शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से ८-१-१२ को शाकोत्सव सम्पन्न हुआ ।

इस शाकोत्सव में करीब १५०० जितने हरिभक्त उपस्थित थे । श्री नरनारायण युवक मंडल तथा गाँव के भक्त तन, मन, धन से सेवा किये थे । अहमदाबाद से प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सभा में स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, स्वा. नारायणवल्लभदासजी इत्यादि सन्तो ने प्रेरक प्रवचन किया था । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने शाग का वघार करके सभी को आनन्दित किया था ।

– स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर

पोर गाँव में प्रथम शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ८-१-१२ को पोर गाँव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस उत्सव में करीब १२०० जितने भक्त लाभ लिये थे । स्वा. चैतन्य स्वरुपदासजी तथा नीलकंठ स्वामीने सुन्दर कथा की थी । बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में शाग का वघार किये थे । सभा में स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. देवप्रकाशासजी, जे.पी. स्वामी तथा नारायणवल्लभ स्वामीने प्रेरक प्रचन किये थे । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सेवा करने वाले सभी भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आयोजन का कार्य चैतन्यस्वरुपने सम्हाला था ।

– विनुभाई पोर

मुबारक पुर में १२ घंटे की महामंत्र धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. पी.पी. (छोटे) की प्रेरणा से मुबारकपुर में प्रतिवर्ष उत्तरायण में ७ घन्टे की धुन की जाती है । इस वर्ष भी यह आयोजन किया गया था । पूर्णाहुति के प्रसंग पर छोटे पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे ।

– शा. दिव्यप्रकाशदासजी, नारायणघाट

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

अमदावाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। यहाँ पर शाक का वघार अपने हाथों से किये थे। सभा में आनंद स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामी, हरिस्वरुप स्वामी, तथा जे.के. स्वामी इत्यादि संत पधारे थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने श्रीहरि का सुन्दर दृष्टांत देकर हार्दिक आशीर्वाद दिया था। कितने हरिभक्त गुरुमंत्र यहाँ पर लिये थे। - श्रीन.ना.युवक मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा राजेन्द्रप्रसादजी स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के गाँव में युवक मंडल ने सभा का आयोजन करके श्रीहरि के नियम, निश्चय, धर्मकुल माहात्म्य तथा पक्ष की वात करके भजन-कीर्तन किया था। यहाँ के युवक सुन्दर प्रवृत्ति द्वारा अगल-बगल के गाँवं में सत्संग का प्रचार कर रहे हैं।

- पुरुषोत्तम का. पटेल, दासभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के संतो की प्रेरणा से धनुर्मास के समय ५ बजे से ६ बजे तक प्रातःकाल जेतलपुर वाड़ी के विद्यार्थी संतो द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र की महाधून का लाभ दिया गया था। - जयंतीभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) विराटनगर

यहाँ की सत्संगी बहनो द्वारा तथा प्रवचन धुन-कीर्तन प्रातः ५ से ७ तक किया गया था। ता. १३-१-१२ को प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। बाद में प.पू. गादीवालाजी ठाकुरजी की आरती करके सभा में विराजमान हुई थी। अन्त में श्री नरनारायणदेव की निष्ठा की बात करके हार्दिक आशीर्वाद दी थी। सभी चरण स्पर्श तथा दर्शन का लाभ ली थी। - नानी बहन

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. माधवप्रसादजी की प्रेरणा से तथा श्री वाडीलाल अमथाराम मोदी परिवार की तरफ से शाकोत्सव सम्पन्न हुआ था। सभा में बलदेव स्वामी, हरिजीवन स्वामी तथा युवक मंडल ने धुन कीर्तन किया था। बाद में शाकोत्सव का कार्य सम्पन्न किया गया था। अगल बगल के गाँव के करीब २००० जितने भक्त उपस्थित थे। - को. हरिभाई मोदी

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगांव-शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने शाग का वघार करके सभी को दिव्य दर्शन का लाभ दिया था।

सभा में पू. महंत हरिकृष्ण स्वामी, देव स्वामी, आनंद स्वामी, नटु स्वामी पधारे हुये थे। पपू. आचार्य महाराजश्रीने संतो के प्रवचन के बाद सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। अन्त में आगन्तुक भक्तजन शाकोत्सव का लाभ लेकर विसर्जित हुए थे। - को. हर्षदभाई पटेल

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर मंदिर में धनुर्मास तथा शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित होकर धुन का लाभ किये थे। शा. सत्यसंकल्पदासजीने तथा प्रेमवल्लभ स्वामीने ठाकुरजी का सुन्दर श्रृंगार किया था। ता. १४-१-१२ को महापूजा तथा महाप्रसाद का आयोजन किया गया था।

भव्य शाकोत्सव ता. ७-१-१२ को शाकोत्सव में करीब १० हजार भक्त लाभ लिये थे।

स्वा. प्रेमवल्लभदासजी, शा. सुव्रतस्वरुपदासजी तथा सत्संग संकल्पदासजीने कथाका लाभ दिया था। युवकों की सेवा सराहनीय थी। - शैलेन्द्रसिंह झाला

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी में शाकोत्सव

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से तथा सां.यो. शांताबा, हंसाबा तथा रंजनबा की प्रेरणा से ३०-१२-११ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था। को. कृष्णवल्लभदासजी तथा संत मंडलने कथा करके भक्तों को सन्तुष्ट किया था। इस प्रसंग का पाटडी गाँव के अगल बगल के भक्त भी लाभ लिये थे। - नारायणसिंह परमार

चराडवाधाम में भव्य शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चराडवा

धाम में १७-१-१२ ता. को भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ था। इस प्रसंग पर स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने शाकोत्सव का महत्व समझाया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने शाकोत्सव का महत्व समझाया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री का दिव्य स्वागत किया गया। बाद में महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में शाग का वघार करके सभा में विराजमान होकर करीब १०० जितने भक्तों को कंठी धारण करवाये थे।

इस अवसर पर अहमदाबाद के महंत स्वामी, चराडवा के महंत स्वामी, सुरेन्द्रनगर के को. स्वामी इत्यादि संत प्रेरक प्रवचन किये थे। अन्त में पपू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

- श्री न.ना.युवक मंडल, चराडवा

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिय

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ मंदिर में धनुर्मास दरम्यान प्रातः ५-४५ से ६-४६ तक अखंड धुन की जाती बाद में महंत स्वामी निष्कुलानंद स्वामी रचित सारसिद्धि ग्रन्थ की कथा १५ जनवरी तक किये थे। जिस में अनेको हरिभक्त भाग लिये थे। - प्रवीण शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल की आज्ञा से शिकागो में धनुर्मास के समय धुन का आयोजन तथा उत्तरायण का उत्सव मनाया गया था।

धनुर्मास में मंगला आरती तथा धुन में बड़ी संख्या में हरिभक्त आते थे। नीलकंठ स्वामी कथा का लाभ देते थे।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने दिसम्बर के लास्ट में बालकों, युवकों, युवतियों के लिये ४ दिन का शिबिर रखा था। जिस में ठाकुरजी की आरती-प्रवचन तथा अन्य प्रवृत्ति की गयी थी। शिबिर में दिनेश, इशान, विकास, शनि, ध्रुव, निरव, जैनिक, विवेक, मितुल पूर्वीश, संजय, हेमल इत्यादि युवकों ने सुन्दर सेवा का लाभ लिया था । भोजनालय में बहनो ने सुन्दर सेवा की थी।

उत्तरायण के ज्ञान शिबिर में महंत स्वामी तथा पुजारी स्वामीने सुंदर कथा की थी। सभा संचालन पूर्वीश पटेल बड़े भगत, विवेक ब्रह्मभट्ट इत्यादि भक्त संप्रदाय का ज्ञान दिये थे। अन्यत्र इसकी बेव साईट पर लाईव प्रसारण भी किया गया था । कीर्तन भजन का भी आयोजन किया गया था । शान्तिप्रकाश स्वामीने शिबिर में आभार विधिव्यक्त किये थे। उत्तरायण के अवसर पर महंत स्वामी तथा पुजारी स्वामीने दान के लिये पर्यटन किया जिस में अच्छालाभ मिला था।

- वसंत त्रिवेदी

वोशिंग्टन डी.सी. आइ.एस.एस.ओ. चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से १७ दिसम्बर को सायंकाल ५-१५ से ९-१५ तक कथा-धुन-कीर्तन, ठाकुरजी की आरती इत्यादि कार्यक्रम समूह में भक्तों ने किया था । सायंकाल ६-१५ से कोलोनिया से ज्ञान स्वामीने लाईव टेलीकास्ट द्वारा कथा का लाभ दिया था । सायंकाल १५ मिनिट के लिये वडनगर मंदिर से वी.पी. स्वामी ने अमृतवाणी का लाभ दिया था। अन्त में हरिभक्त मंगलपाठ करके प्रसाद ग्रहण करके विदा हुये थे। - कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर फ्लोरिडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. योगीचरणदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में मार्गशीर्ष एकादशी को महामंत्र की धून की गयी थी। जिस में बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित थे । लंडन से श्री हीरजीभाई वरसाणी तथा श्री नारणभाई राघवाणीने भी धुन का लाभ दिया था। -मणीभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर में धनुर्मास के समय १ घन्टे तक धुन का आयोजन किया गया था। ता. १४-१-२०१२ उत्तरायण को ४ घन्टे की धुन की गयी थी। जिस में अ.सौ. हीराबहन उपस्थित थी । प्रतिदिन की धुन में ३३ हरिभक्त भाग लिये थे । हीराबहन हसमुखभाई परिवार की तरफ से महामंत्र धुन के लिये लगातार ४ वर्ष के लिये धुन निश्चिय किया गया था । धनुर्मास में महाप्रसाद की मुख्य यजमान अ.सौ. नवेदिताबहन तरुणभाई त्रिवेदी थी। इस प्रसंगपर आइ.एस.एस.ओ. के प्रमुख श्री अशोक पटेल लंडन से पधारे थे।

शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने यजमान परिवार के सेवा की प्रसंसा की थी। अहमदाबाद मंदिर की धून के लिये लेस्टर के २५ भक्त यजमान बने थे। यहाँ के धुन में बडी संख्या में भक्त उपस्थित थे। - किरण भावसार सहमंत्री लेस्टर

अहमदाबाद तथा मूली देश के महिलाओं के लिये मंदिर में चलती सत्संग सभा के विषय में

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से अहमदाबाद तथा मूली देश के गाँव के मंदिरो में सत्संग सभा नियमित रुप से आयोजन करने के लिये निश्चित किया गया है। सभी बहनों को सभा का लाभ लेने के लिये तथा सहकार देने के लिये आज्ञा की है। यह तो अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने के लिये है।

संप्रदाय का गौरव

श्री नरनारायण देव गादी के अमेरिका कोलोनिया के अपने निष्ठावान सत्संगी श्री नयनभाई परीख न्यूयोर्क के **"Department of Environment Protection"** का बोर्ड मेम्ब्र के रुप में नियुक्त किया गया है । इस प्रकार का गौरवास्पद प्राप्त हुआ है यह जानकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उनके ऊपर प्रसन्न होकर उनके उत्तरोत्तर वृद्धि के लिये आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर : स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. विश्वप्रकाशदासजी के गुरु तथा स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी के दादा गुरु वयोवृद्ध संत स्वा. हरिसेवादासजी (वडनगर स्वामिनारायण मंदिर के महंत) (उम्र १०१ वर्ष) ता. १२-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षर निवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : श्री रोहितभाई पोपटलाल भावसार की धर्मपत्नी जयश्रीबहन ता. ३-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

राजकोट : जीरागढ-हालार मन्दिर के पूर्व ट्रस्टी प.भ. दाजीभाई रवजीभाई वरु ता.७-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

उवारसद : श्री भाग्येशभाई गोरधनभाई पटेल की माताजी मंजुलाबहन गोरधनभाई पटेल ता. ३१-१२-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

रवारवा : श्री राजेशभाई नारणभाई देपैया (उ. २८ वर्ष) ता. १-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

बालवा : प.भ. चौधरी रामजीभाई छगनभाई ता. ४-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद-सरसपुर : प.भ. हंसाबहन नवीनचंद्र भावसार श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुए है।

अहमदाबाद : प.भ. जोगेशभाई तथा परमेशभाई पटेल के पिताजी प.भ. रमणभाई पटेल ता. १७-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

देऊसणा : प.भ. पटेल नरोत्तमभाई परसोत्तमभाई ता. ५-१-२०१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

न्यारा (मूलीदेश) : प.भ. जयाबहन कान्तिभाई पीठडीया (श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुजारी) श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुए है।

साबरवाड (इडर देश) : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सदस्य पटेल हसमुखभाई भीखाभाई की माताजी राईबहन भीखाभाई पटेल ता. २९-१२-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

॥ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ ॥

પ.પૂ. સદ્‌. શ્રી રામકૃષ્ણદાસજી સ્વામી

શ્રી સ્વામિનારાયણ સંસ્કારધામ ગુરુકુલ

હળવદ રોડ, પોસ્ટ બોક્ષ નં. ૨૨, મુ.તા.ધ્રાંગધ્રા, જી. સુરેન્દ્રનગર

તા. ૨૮/૦૧/૨૦૧૨

પ્રતિ

પ.પૂ.સદ્‌. મહંત સ્વામી શ્રી નારાયણપ્રસાદદાસજી સ્વામી

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, મુળીધામ

વિષય : મુળીદેશનાં ત્યાગીપત્રકમાંથી સમંડળ મારુ નામ રદ કરવા બાબત.

જય શ્રી સ્વામિનારાયણ સહ જણાવવાનું કે, હું સાધુ રામકૃષ્ણદાસજી સ્વામી ગુરુ અ.નિ.પ.પૂ. સદ્‌. શાસ્ત્રી શ્રી વિજ્ઞાનજીવનદાસજી સ્વામી મૂળીધામ.

હું ૩૪ વર્ષથી મુળીદેશમાં સંપ્રદાયનાં ત્યાગાશ્રમનાં નિયમોનુસાર રહી સંપ્રદાયનાં નિયમાનુસાર ભજન-ભક્તિ સાથે સત્સંગનાં સેવાકાર્ય કરતો રહ્યો છું. હું તથા મારુ ત્યાગી શિષ્યમંડળ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, મુળીદેશનું નાગરીકત્વ ધરાવીએ છીએ.

વર્તમાન સમયે મારુ તથા મારા સંતમંડળનું શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, મુળીધામ માંથી નામ રદ કરવા આપશ્રીનાં ચરણોમાં નમ્ર વિનંતી કરું છું. મારી વિનંતીને આપ સ્વીકારી કૃતજ્ઞ કરશોજી.

અમો ત્યાગી સંતમંડળના નામો નીચે મુજબ છે.

(૧) સાધુ રામકૃષ્ણદાસ - પોતે (૨) સાધુ વિશ્વજીવનદાસ (૩) સાધુ દિવ્યસ્વરૂપદાસ, (૪) સાધુ જગતપ્રકાશદાસ, (૫) સાધુ ધર્મનંદનદાસ, (૬) સાધુ ભજનપ્રકાશદાસ, (૭) સાધુ ભક્તવત્સલદાસ, (૮) સાધુ નિત્યપ્રકાશદાસ, (૯) સાધુ હરિકૃષ્ણદાસ, (૧૦) સાધુ વિશ્વમંગલદાસ, (૧૧) સાધુ નિર્મળચરણદાસ,

(૧૨) પાર્ષદ અવિનાશ ભગત, (૧૩) પાર્ષદ રમેશ ભગત, (૧૪) પાર્ષદ ભાવેશ ભગત

લિ. [illegible]

(સાધુ રામકૃષ્ણદાસનાં જય શ્રી સ્વામિનારાયણ)

अहमदाबाद तथा मूली देश के हरिभक्तों को सूचना

सभी सत्संगियो को सूचित किया जाता है कि श्री स्वामिनारायण गुरुकुल ध्रांगध्रा श्री नरनारायणदेव देश तथा मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के साथ कोई सम्बन्धनहीं है । जिससे देश-विदेश के सभी हरिभक्त इस की जानकारी करलें । किसी कारण किसी हरिभक्त को खबर न हो तो वे इस सूचना पर विशेष ध्यान दें ।

– आज्ञा से

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।